[This question paper contains **4** printed pages.]

आपका अनुक्रमांक .....

363 **B**

B.A. (Programme)/Sem. II

(L)

HINDI DISCIPLINE – Paper B

हिन्दी अनुशासन – प्रश्न-पत्र B

Madhyakaleen Kavya

(मध्यकालीन काव्य)

(प्रवेशवर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित काव्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) कहा मानसर चाह सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई॥
भा निरमल तिन्ह पायँन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे॥
मलय समीर बास तन आई। भा सीतल, मै तपनि बुझाई॥
न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य दसा मै पाप गँवावा॥
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सरिवन्ह चंद बिहँसाना॥
बिगसा कुमुद देखि ससि रेखा। भै तह ओप जहाँ जोई देखा॥
पावा रूप रूप जस चहा। ससि मुख जनु दरपन होइ रहा॥
नयन जो देखा कवल भा, निरमल नीर शरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर॥

[P. T. O.

अथवा

संपति सुमेर की कुमेर की जु पावै ताहि तुरत लुटावत
बिलम्ब उर धारै ना।
कहै पदमाकर सु हेममय हथ्थिन के हलके हजारन के
बितर बिचारै ना।
गंजगजबकस महीप रघुनाथराय याहि गज धोखेंक काहै
देई डारै ना।
यातें गोरि गिरिजा गजानन कों गोंइ रही गिरि तें गरे
ते निज गोद में उतारै ना।

6

(ख) गावैं गुनी गनिका गन्धरब् औ सारद सेस सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेश ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत॥
जोगी जती तपसी अरू सिद्ध निरन्तर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत॥

अथवा

करता था तो क्यूँ रह्या, अब करि क्यूं पछताइ।
बौवे पेड़ बबूल का, अंब कहाँ तैं खाइ॥
जानि बूझि साचहि तजै, करै झूठ सूँ नेह।
ताको संगति राम जी, सुपिनै हो जिनि देहु॥

6

2. दिए गए निर्देशों के आधार पर निम्नलिखित काव्यांशों का रचना कौशल (केवल **150** शब्दों में) स्पष्ट कीजिए :

(क) *निर्देश: मित्र प्रशंसा*

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्र क दुख रज
मेरू समाना।

जिन्ह के असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई।

कुपथ निवरि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटइ अवगुनन्हि दुरावा।

देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई॥

(ख) *निर्देश : वात्सल्य भाव का चित्रण*

जसौदा हरि पालने झुलावै।

हलरावै दुलराइ मल्हावै जोई सोई कछु गावै॥

मेरे लाल को आउ निदरिया काहे न आनि सुलावै॥

तू काहे न बेगि सो आवै तोको कान्ह बुलावै।

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं कबहुँ अधर फरकावै॥

सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि करि करि सैन बतावै॥

इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुर गावै।

जो सुख 'सूर' अमर मुनि दुरलभ सो नंद भामिनि पावै॥

(ग) *निर्देश: अन्योक्ति अलंकार*

मरत प्यास पिंजरा-परयौ सुआ समै-कें फेर।

आदरू दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर॥

चल्यौ जाइ, ह्याँ को करै हाथिनु के व्यापार।

नहिं जानतु, इहिं पुर बसैं धौबी, ओड़, कुँमार॥

(घ) *निर्देश : कृष्ण का स्वरूप।*

निपट बंकट छब अँटके।

म्हारे ठोणा निपट बंकट छब अँटके॥

देख्याँ रूप मदन मोहन री, पियत पियूखन भटके।

बारिज भवाँ अलक मतवारी, ठोणे रूप रस अँटके।
टेढ्या कट टेढ़े कर मुरली, टेढ्या पाय लर लटके।
मीरा प्रभु रे रूप लुमानी, गिरधर नागर नटके। 6,6

3. कबीर की सामाजिक चेतना पर विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

रैदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए। 12

4. मीरा के कृष्ण-प्रेम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

तुलसीदास के काव्य-सौन्दर्य का विश्लेषण कीजिए। 12

5. घनानन्द के काव्य में विरह-वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

बिहारी के शृंगार-चित्रण पर विचार व्यक्त कीजिए। 11

6. आदिकाल की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

राम काव्य की विशेषताएँ बताइए। 8

7. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

अथवा

'ज्ञानमार्गी शाखा' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 8